विद्याभवन ,बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय.
रूपम कुमारी , वर्ग-दशम् ,विषय-हिन्दी 🌷🌷
दिनांक- २/७/२०

🌷 ||अध्ययन-सामग्री || 🌷.

सुप्रभात बच्चों ,

जीवन की एक और सुबह आपको मिल गई । अब इस तोहफे को सहेजते कैसे हैं ,यह आप पर निर्भर करता है । यथासंभव कोशिश करें कि तनाव न होने पाये ..🌷

पिछली कई कक्षा से हम बालगोबिन भगत को पढते आ रहे हैं ,जिसमें आपने पढा कि

कातिक आते ही वह प्रभाती गाने शुरु कर देते हैं । अब आगे .....

|| बालगोबिन भगत ||

न जाने किस वक्त जाकर वह नदी- स्नान को जाते; वह भी गाँव से दो मूल दूर ! वहाँ नहा-धोकर लौटते और गाँव के बाहर ,पोखर के ऊँचे भिंडे पर ,अपनी खँजड़ी लेकर बैठते और अपने गाने टेरने लगते । मैं शुरु से ही देर तक सोनेवाला हूँ किंतु, एक दिन, माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भी ,उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था ।अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे । हाँ ,पूरब में लोहा लग गई थी ,जिसकी लालिमा को शुक्रिया का और बढा रहा था ।

खेत ,बगीचा ,घर-सब पर कुहासा छा रहा था । सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृति मालूम होता था रहस्यमय. वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह ,काली कमली ओढे बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे । उनके मुँह शब्दों का ताँता लगा था ,उनकी उँगलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थी । गाते -गाते इतने मस्त हो जाते ,इतने सुरूर में आते कि मालूम होता ,अब खड़े हो जाएँगे । कमली तो बार -बार नीचे सरक जाती ।मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था । किंतु तारे की छाँव में भी उनके मस्तक के श्रम-बिंदु ,जब-तब चमक ही पड़ते ।

संक्षेपण: बालगोबिन भगत की दिनचर्या बिल्कुल पक्की थी साथ ही साथ ईश्वर की

भक्ति और निष्ठा भी बड़ी दृढ़ ! मौसम की बिना परवाह किए बिना वह नदी- स्नान तथा पूजा-पाठ कर लिया करते थे ।

शब्द-संपदा:

- जीने -सीढ़ियाँ
- लोही -सूरज की प्रथम लालिमा
- श्रम-बिंदु-. अधिक श्रम करने पर मस्तक पर पसीने की बूँदों का चमकना ।
- कमली -कंबल
- सुरूर -नशा
- प्रभाती -सुबह में गाया जाने वाली भजन
- आवृत -ढका हुआ ।

- ***दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा अपनी कॉपी में लिखें और कठिन शब्दों को याद करें।.***

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷